

धारणी संग्रह -

आशा नमो भगवते

३५९

आशा नमो भगवते

आ

[illegible]

नात्रधीचक्षुः॥ सवत्री सर्वशमालका॥ कृतांशुसनिहिता॥ कोमात्री विश्वप्रयिनि॥ ३॥ विर्ययात्रमिनाद
 वी॥ जगदानंदलावना॥ नायनिउग्रप्रयिच॥ अद्विसिधिवलप्रदा॥ १॥ दानयुधमहालाभा॥ अजिताजि
 नविक्रमा॥ जगदेकहिरायाका॥ संश्रमनात्रजया॥ २॥ क्रान्तियात्रमिनादवी॥ सिलनीध्यानधननि॥ य
 मध्वानीव॥ यममासनमासनी॥ ९॥ शुद्धप्रयिमहारजा॥ हमवर्षप्रकाशनी॥ विक्रामनिधनिदवि॥ यः
 ज्ञायुल्लकधननि॥ १०॥ निधानकटमात्रद्विधनागात्रधनपीय॥ नैधुडकं महाभ्रादि॥ दिव्यावर्षद्विध

ॐ

ली ॥ ११ ॥ मानिसर्ववृद्धानां ॥ तत्त्वधर्मश्च त्रयश्च ॥ शुद्धगाराविनिदवि ॥ लावांरावविवर्जिनि ॥ १२ ॥ श्रीं
वेन्ययिकिविनगात्र ॥ दिपिनिकुसुद्विदिनि ॥ हिंदिनि सर्वमानानां ॥ सफयागात्रकारुनि ॥ १३ ॥ श्रीं निवद
मानात्र ॥ गुह्यनाटुगुह्यवासिनि ॥ स्वतस्वनि विमालादि ॥ बहुवंकविहाविनि ॥ १४ ॥ तथागतमहाजम्पा ॥ व
र्जनिधर्मधामनि ॥ कर्मधर्मश्च त्रिविधा ॥ विश्वकालाउमगुली ॥ १५ ॥ बाधनि सर्वसत्त्वानां ॥ वाख्यंगहन
राखनि ॥ धन्यादिमूकिसयनी ॥ अथथाद्वयराविनि ॥ १६ ॥ सर्वार्थसाधनिरुद्धा ॥ श्रीनूयामितविक्रमा ॥ १७

२

दर्शनवृद्धमार्गनां ॥ नष्टमार्गप्रदशनि ॥ १८ ॥ वागीश्वरी महात्मकी ॥ लाफीधामिधनंददा ॥ श्रीनूपाधा
त्रमिमिद्धा ॥ यानिशागमीश्वरी ॥ १९ ॥ मनाहविमहाकाकि ॥ शुभागाप्रियदर्शनि ॥ सार्थवाहकृपादशि ॥ स
र्वनाथगतात्मकि ॥ २० ॥ नमः कुरुं महादेवि ॥ सर्वसत्त्वार्थदायनि ॥ नमः कुरुदिव्यनूयिव ॥ वगुंधानानम
॥ २१ ॥ अस्मान्नमस्तु नामः ॥ श्रीकानययथोदिमां ॥ प्राप्तानि निनियनं ॥ सिद्धिसिद्धिं सुमनावधानं ॥
॥ २२ ॥ यदज्ञानानकुरुं योदं ॥ अनंत्यसूदाननं ॥ तत्सर्वकययिष्यनि ॥ समननामदकं ॥ २३ ॥ अथवासि

मा

लसंयन्नसफजानिस्मभारुवन् ॥ पीयवदवाक्यनूयवानपीयदर्शन ॥ २३ ॥ विषकृणियकूलवृ ॥ आदय
मूयजायत ॥ अंतहमिश्रनं प्राप्ता ॥ प्राप्तायश्च प्राफसूखावनि ॥ २४ ॥ ॐ निशावगुंधा नारका प्रकाशाना
मास्मान्नवगतकं न विवा न हृदयनामधननिधयि समायं ॥ २५ ॥ ॐ नमो गवस्य ॥ आर्यवर्जविद्या
निये ॥ एवं मया फलमकस्मिन्ममयह गवान् ॥ वज्रपूविहयनिस्म ॥ अहं यमरुयसनिहं दृष्टि ॥ स
र्वसनिपं वर्जसमयाधिष्ठय ॥ वज्रकाटसंहरं वज्रसायदं हारवन् स्म ॥ न सर्वजयनिहन् ॥ सर्वजयनाजिनं ॥

३

सर्वसत्त्वविद्यायनकनं ॥ सर्वविद्यादहनकनं ॥ सर्वविद्यासंफुलकनं ॥ सर्वविद्याकर्मानविधं सुनकनं
यनकर्माविद्यायनकनं ॥ सर्वयहास्तदनकनं ॥ सर्वयहविमोहनकनं ॥ सर्वहृतायकवर्तनकनं ॥ सर्वविद्या
मनुकमयनायनं ॥ असिद्धानां सिद्धनकनं ॥ सिद्धानां विविनासनकनं ॥ सर्वकर्मायदं ॥ सर्वसत्त्वानां लः
कृदकनं ॥ सात्त्विकं यात्तिकं ॥ सर्वसत्त्वानां सुमनकनं ॥ सर्वसत्त्वानां भाहनकनं ॥ ॐ मातु महावलवृद्धनृणा
यन ॥ ऊर्जडावर्जयाधियत्यराघर्ग्य ॥ ॐ नमो ननु गाय ॥ नयथा ॥ ॐ २३ नय २ स्मृ २ स्मृ २ य २ घृ २ २६

धृक्कयय२सर्वसनिवाधय२संवाधय२स२शासय२म२जामय२सर्वहानिकूट२संकूटय२सर्वसज्ज
 नघट२घाटय२सर्वविधावज२कूटय२कूटवज२मटवज२वज२हामनीलवज२सर्वजायस्वाहा॥ॐ
 कूट२निमल॥ धून्कूट२निमल२कूट२वज२विजयायस्वाहा॥ ॐवज२किलिकिलालयस्वाहा॥ ॐकूट२म
 ट२नट२माननायमाननायस्वाहा॥ ॐवन२निवन२हन२मन२मानय२वज२विदाननायस्वाहा॥ ॐहि
 द्य२हिन्द२महावर्जकिलिकिलालयस्वाहा॥ ॐप्रहन२वर्जप्रहंजनायस्वाहा॥ ॐमनिष्ठि२नवज२मनिष्ठि

नवर्जमहावज॥ अयनिहृन्वज॥ हिवज॥ धं वज॥ यस्वाहा॥ ॐ धं न२ धीनि२ धू२ न२ सर्ववज॥ कू२ न२ मावर्ल॥ यस्वा
हा॥ ममसर्वध॥ मा२ न२ य॥ रू॥ रू॥ स्वाहा॥ ॐ नम॥ सर्व॥ सम॥ न॥ व॥ र्जा॥ नां॥ सर्व॥ व॥ न॥ मा२ न२ य॥ महा॥ व॥ न॥ क॥ ट॥ व्य॥ न॥ य॥ ॥ अ॥ व॥
न॥ म॥ गु॥ ल॥ माॡ य॥ अ॥ नि॥ व॥ र्जा॥ ॥ महा॥ वि॥ म॥ न॥ न॥ अ॥ जि॥ न॥ क॥ ल॥ २॥ टि॥ टि॥ टि॥ टि॥ टि॥ पि॥ न॥ न॥ द॥ ह॥ २॥ न॥ व॥ र्ज॥ नि॥ नि॥ नि॥ श्व॥ न्ध॥ २॥ महा॥ व॥
न॥ व॥ र्जां॥ कू॥ ठा॥ लाॡ य॥ स्वाहा॥ ॐ ॥ ॐ न॥ माॡ न॥ त्र॥ य॥ य॥ ॥ न॥ माॡ व॥ न॥ व॥ र्ज॥ याॡ न॥ य॥ ॥ महा॥ व॥ र्ज॥ स्यॡ नाॡ य॥ न॥ य॥ ॥ ॐ ह॥ न॥ २॥
व॥ र्ज॥ म॥ थ॥ २॥ व॥ र्ज॥ ध॥ न॥ २॥ व॥ र्ज॥ ह॥ न॥ २॥ व॥ र्ज॥ य॥ व॥ २॥ व॥ र्ज॥ ध॥ न॥ २॥ व॥ र्ज॥ ध॥ न॥ य॥ २॥ व॥ र्ज॥ दाॡ न॥ न॥ २॥ व॥ र्ज॥ द्वि॥ द॥ २॥ व॥ र्ज॥ हि॥ द॥ २॥ व॥ र्ज॥ कू॥ रु॥

स्वाहा ॥ उं न मा व नु व रु या न य ॥ महावर्जकाधाय ॥ उं रु न श नि रु श व न्ध श न श न्मि न रुं रु ॥ इ द या य इ द य मूः
 ल म रु ॥ सर्व या य रु यं रु त्वा सर्व इ श व वि ना श नं ॥ म ना रि सर्व म न्ना मं सर्व या म म लं रु नं ॥ उ य म न्ना डि या रु त्वा
 न द्या य य रु ना यू ष ॥ न रु मा न वि न द्या य न स य नं मू ख ॥ का का पी य व रु न इ रु रु द व श्व उ य रु ना ॥ ना मा यं स
 म र्था म्हा रु य व ग न म व च ॥ य रु न रु य पि दा वा ॥ का रु दा दा नू धा ग हा ॥ या रु क व व रु स व प्र ॥ मा का या य स मू षी
 नं ॥ न व सू मा नां न द नि ना षा न वं सू म रु मं ॥ शु श्व रु म रुं दं सू रुं ग मि लं व रु णा व लं गु वि व रु प्र लं रु ना ॥ न व

सर्व इ रु त्मा उ य स र्ग म रु ना ॥ न रु मा स्य व प्र ण म्प रु म म न्ना सर्व ना यू नां ॥ आ यू श्व व रु न यू ष ॥ सर्व या य वि नाः
 मा रु नं ॥ म नि स य य इ वा रि न त्वा न त्वा रु न स्य व रु नं ॥ व रु य मि रु यू थै श्व रु ला मा यू रु का ष ज्ञा नं ॥ घ टं उ य रु
 रु वा यि सू वि व रु न वा सि नं ॥ उ क वि स मि वा ना नू वा ला न धा रु न रु नं ॥ रु य रु वि दा न नं म रु स म य र्था त्या थि व
 स दा ॥ उ वं रु व हि ना रु न सं य रु न रु नं ॥ ॥ रुं दं म वा व रु रु ग वा न व रु य मि रु वि न म रु य न रु नि नि ॥ ॥
 आ र्थ व रु वि दा न रु द द य म रु धा व रु स मा रु नं ॥ ॥ उं न मा रु ग व रु आ र्थ म न य नि रु द द या य ॥ उ वं म या रु

मं

[illegible][illegible]

मं

नयनयस्वाहा ॥ ममसयविवाजस्यसर्वसत्त्वानां ॥ अहिकुनूस्वाहा ॥ ॐ मानंदगनयनिहृदय ॥ यः कश्चिद
कुलपुत्रावा ॥ कुलइहिगोवारिकुवाहिकुनिवा ॥ उयासकावाउयासिकावा ॥ यः कश्चिदकार्यमामनुयनमः
नंवाविजत्तपूजांवा ॥ दशभक्तगमनंवा ॥ नाककुलपुत्रनंवा ॥ ननवृद्धानांरुगवन्नाराखिकुयुक्तिंरुत्वा ॥ आ
र्यगनयनिहृदयाय ॥ मफवानानुवाजनयिकुयं ॥ नस्यसर्वातिकायांसिधानिनाउसंसयन ॥ नस्यसर्वकलिक
लहृदमदिमविग्रहविवादस्वुनित्यसमन ॥ करुयं सर्वप्रसमनंगदुकि ॥ दिनदिनसफवानानुवाजनयि

१

नयं ॥ महाभारतगरुविषयमि ॥ नाककुलगमनकालमहाप्रभदयारुविषयमि ॥ अरिधनारुविषयमि ॥ न
वास्यकश्चिददवनाजननययधमि ॥ अवनानयनिलयन ॥ नवास्यवाहिविलंवाकाहविषयमि ॥ जानोजानो
जानिसमनारुविषयमि ॥ ॐ ॥ ॐ दंमवावरुगवानात्मनायुष्मानानंदारुवहिकुतावससर्वावनियवर्षाह
दवमानुखा ॥ सुनगवृत्तगंधर्वशेलाकारुगेवन्नाराखिकुमयनंदनिकिस ॥ ॐ निधीआर्यगनयनि
हृदयानामधननिधनिसमाय ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ नमोभारतगवन्नाराखिकुतावससर्वावनियवर्षाह

छिनंमहयूकरुवांजथाविरुनत्रपन॥ सुवर्धयुतनामलिषित्वाधर्मधुगर्हसस्यसंयुक्तधर्मधुवाजैदेनवा
 आधनति॥ कायकात्रयित्वासफकावमनिचउवत्वात्रीगद्धन॥ वातासहवात्रयूर्ययत्यकायनाकाद्धयूर्यधूपः
 गन्धप्रदियनेवद्यादिसर्वपूजाहिसंयुक्तयन॥ ॐ मांसर्वनथागगाउलीयविजयानामधाननिवाचयित्वातइशा
 कृत्यनवेत्यमनिमवेर्यन॥ यस्येवंकृत्यनीयितायूर्य॥ वाधिविरापीनदानदानव्यंजथासफदिनाय॥ सफ
 मास्यांयुप्रत्यांगद्धति॥ सफमास्यांयुप्रत्यांगमिष्यति॥ सफमास्यांयुसंगंजिवति॥ समृतिमायूरुवति॥ अगविनि

मूकाहवति॥ थाआयुत्रयसंयधरुवतिस्म॥ ॥ आर्यउलीयविजयानामधाननिसमाफं॥ ॐ ॥
 ॐ नमोआर्यप्रज्ञायात्रमिताय॥ एवंमेयायुत्रमकस्मिंमेयरुगवान॥ नाजगृहविहवतिस्म॥ गृधकृत्य
 र्वनमहगाहिकुसंधनसाई॥ महगाहिववाधिसत्वमधन॥ केनखलूपनसमयरुगवान॥ नार्यावेलाकिट्य
 नवाधिसत्वमहासत्वगहिनायांप्रज्ञायात्रमिताया॥ बर्यामववयवलाकयितिस्म॥ येकेकनखलुव
 युनगाववलाकयितिस्म॥ अथायुमांसालिपुशुवदानरुवनार्यवलाकिनधनंवाधिसत्वमहासत्वमनद

५

वाचन॥ यकश्चिन्कूलपूजावाकूलइहिनावा॥ अस्यांगहिनायांप्रज्ञायानमितायांवर्णावदुकामस्तनकथसिद्धि
नव्यं॥ एवंमूकज्योर्वावलाकिटश्चनवाधिसत्वमहासत्वमगदवाचन॥ यकश्चिन्कूलपूजावाकूलइहिनावा
अस्यांगहिनायांप्रज्ञायानमितायांवर्णावदुकामस्तनकथसिद्धिनव्यं॥ एवंमूकज्योर्वावलाकिटश्चनवा
धिसत्वमहासत्व॥ आयुश्चंगठभलियुगमगदवाचन॥ यकश्चिन्कूलपूजावाकूलइहिनावाअस्यांगहिना
यांप्रज्ञायानमितायां॥ वर्णावदुकामस्तनैवसव्यवलाकिट्यिनव्यं॥ यक्षेस्त्वानस्वरावसून्यगा॥ यव

७७

लोकयितव्यं॥ न नृपं गुण्यत व न वृत्तं न नृपान पृथक् गुण्यताया॥ पृथक् गुण्यताया नृपं व्यदना गुण्यत न गुण्यते
व व्यदना॥ न व्यदनाया पृथक् गुण्यत न गुण्यताया॥ पृथक् व्यदनाम संज्ञा गुण्यत गुण्यते व व्यदना॥ न व्यदनाया पृ
थक् गुण्यता॥ न संज्ञाया पृथक् गुण्यताया पृथक् संज्ञा॥ संज्ञा ना गुण्यत गुण्यते व संज्ञा नान संज्ञा प्राप्य॥ पृथक्
गुण्यता गुण्यताया॥ पृथक् विज्ञानं॥ एवं तावदने सालिषू सर्वधर्मा स्वताव गुण्या॥ अनृत्येना अनिरुद्धा
अमना विमना अनृत्यूर्ध्वं असंपूर्णं॥ तस्मात्सालिषू गुण्यतायां न नृपं॥ न व्यदना न संज्ञा न संज्ञाना

नविज्ञान॥ नवज्ञानधन॥ नवज्ञाननजिज्ञानकायनमनानवयं॥ नमश्चानगधननूयाननमानस्यधनधर्म
 नवज्ञानधननूयधननवज्ञानविज्ञानधन॥ नवज्ञानविज्ञानधन॥ नवज्ञानविज्ञानधन॥ नजिज्ञानविज्ञानधन॥
 नकायविज्ञानधन॥ नमनाविज्ञानधन॥ नविद्याकथा॥ नसंस्कारकथा॥ नविज्ञानकथा॥ ननामनूयकथाः
 नखदहनकथा॥ नसंस्कारकथा॥ नव्यदनाकथा॥ नापादानकथा॥ नरुवकथा॥ नजानिकथा॥ नमनकथा
 नहृदयंनसमूहकथा॥ नतिनूयनमरुगनामार्ग॥ ननूयनज्ञाननपापि॥ नस्मानहिनसालिपूजजुषाफि

त्वान॥ वाधिसत्त्वमहासत्त्व॥ प्रज्ञायात्रमितायां मातृत्वविहवनिविरुलवनमानत्वात्॥ अनूरुपविषयासा
 निकोक्तानिष्टानिवाद्यपाका॥ सर्ववृद्धेनपिप्रज्ञायात्रमितामृत्तुनूरुनायासम्यक्स्वदवाधिवहिसंवृद्धा
 नस्मानहिसालिपूजज्ञानयं॥ प्रज्ञायात्रमितामनुमहाविद्यामनु॥ अनूरुनामनु॥ असेभामनु॥ असमसेमा
 मनु सम्यक्त्वमिच्छात्वात्॥ प्रज्ञायात्रमितारुक्तामनु॥ नयथा॥ उंगत्यश्यानंगत्ययात्रसंगत्यवाधिसत्त्वात्॥ उ
 वंभालिपूजगम्लीलायां प्रज्ञायात्रमितयां धाकिरयं॥ वाधिसत्त्वेनमाहासत्त्वेनअथेत्थलूहगवान्॥ नस्मानहिन

सारीपूज्यगव्यं ॥ प्रज्ञायात्रमिनामनुमाहविशामनु ॥ असमामनु ॥ अनुरुवामनु ॥ असमसमामनु ॥ सर्वदः
 षष्ठसमामनु ॥ सम्पत्त्वमिथ्यात्वात् ॥ प्रज्ञायात्रमिनामनुमाह ॥ नस्मागहिगसालिवृद्धन ॥ नार्योवलाकिग्व
 गायवाधिसत्वायमहासत्वायसाधूकालमदात् ॥ साधूश्चकलपूज्यवमनदगफिलायां ॥ प्रज्ञायात्रमिनायांवरु
 वंयथवत्वायानिदिष्ठुनदनुनाघं सर्वगधगनेनेहहि ॥ सम्पत्त्वमनु ॥ ॥ दंमेवावदुगवानात्मनाशय
 आंसालिपूज्यार्योवलाकिग्वयवाधिसत्त्वमहासत्त्व ॥ सावसर्वावनियर्षदवमानुषाशुपगत्रुगन्धर्वग्वलाका

१३

रगवकाराखिरमत्यनंदनिस्मृत् ॥ ॥ आर्यप्रज्ञायानमिनाहदयनामधननियनिसमायं ॥ ॥
 १३ नमाहगवग्वार्यमालिविद्ये ॥ ॥ एवंमयाश्रुनमकस्मिन्मयलगवानश्रवणांविहनेनिस्म अगवनः
 अनाथयिषुस्यानाममहाहिकसंधनसाधुमर्चज्यादठारिकुठारं सम्वरुवेध ॥ महाश्रवकैवाधिसत्त्वम
 हासत्त्व ॥ नृखेललगवानेरिकुनोमल्लयनस्म ॥ अस्मिरिकुवाधिसत्त्वमानीदवनासठवदसूर्यमभायूत्रता
 १ नृगद्वि ॥ सानदस्यनगृहगतमध्वनविबुधनन ॥ मयननगृहगत ॥ दंशकन ॥ दधकन ॥ मलासूय

गङ्गानि॥ यापिगस्याहिक्रुवासात्रीविनामदेवगायानामजानानिस्वयिनदस्यन॥ गृहगनवध्वगननिबूध्वगन
गृहगन॥ मनूष्यगनदशुगनदक्षगनसक्षामूगङ्गानि॥ साहंरिक्रुवासात्रीविनामदेवगायानामजानानि
अहमपिनध्वगनगृहगनवध्वगनसूर्यनमूक्षनदक्षुनमूक्षुनदक्षनसक्षामूयगङ्गानि॥ ॐमानि
मनुष्यनिरुवनि॥ नयथा॥ उंयदाकर्मसिपत्रवकर्मसि॥ उदयमसिवेलमसिउलमसि॥ विवलमसि
महाविवलमसिअंनध्वानमसिस्वाहा॥ उंमात्रीविदेवगायेत्यमाग्नयय॥ उत्पथमाग्नयय॥ नाऊकुल

५

पृथ्व्ययनमिनायुः पृथ्व्यज्ञानसंस्कारायधिगं ॥ ॐ सर्वसंस्कारयनिगुहधर्मगगनसमूहगस्वरावविगुहम
 हानययनिवानयस्वाहा ॥ ३ ॥ ननखलपूनः समथनयकेषिठदिनांवृद्धकादिनांमकमननेकस्वनन
 दमयत्रिमिनायुगुंरुखिनं ॥ ॐ नमोऽरुगवनेऽयनमिनायुज्ञानगुविनिधिगनज्ञानाज्ञायतथगताया
 ॥ हं नम्यकस्वज्ञाय ॥ नयथा ॥ ॐ पृथ्व्यमहायुधयनमिनयुधयनमिनायुधय ॥ ज्ञानसंस्कारायधिगं ॐ
 सर्वसंस्कारयनिगुहधर्मगगनसमूहगस्वरावविगुहमहानययनिवानयस्वाहा ॥ १ ॥ ननखलपू

२८

समूहगः ४

नः समथन ॥ गंगानदिवाल्कानांवृद्धकादिनांमकमननेकस्वनन ॥ ॐ हंमयत्रिमिनायुःसूगंरुखिनं ॥
 ॐ नमोऽरुगवनेऽयनमिनायुज्ञानगुविनिधिगनज्ञानाज्ञायतथगताया ॥ हं नम्यकस्वज्ञाय ॥ नयथा ॥
 ॐ पृथ्व्यमहायुधयनमिनयुधयनमिनायुधय ॥ ज्ञानसंस्कारायधिगं ॥ ॐ सर्वसंस्कारयनिगुहधर्म
 गगनस्वरावविगुहमहानययनिवानयस्वाहा ॥ ८ ॥ यः ॐ हंमयत्रिमिनायुगुंरुखिनं ॥ लिखिष्यः
 किलिषांययिष्यन्ति ॥ सगतायुखानयिवर्यसगायुरुविष्यनिष्यूननवायुविवर्धयिष्यन्ति ॥ ॐ नमोऽरु

गवगजयनमिनायूज्ञानशुविनिधिगङ्गावाजायनथगताया ॥ हंससम्पदस्वजाय ॥ नयथा ॥ ॐ पूर्य २ महापूर्य
 अयनमिनायूज्ञानशुविनिधिगङ्गावाजायनथगताया ॥ ॐ सर्वसम्पदयनिगुद्धधर्मगगनसम्पदगङ्गा
 वविगुद्धमहानययनिवाययस्वाहा ॥ य ४ ॥ दंमयनिमिनायू ४ मूर्तिलिखिद्यनिलिखाययिद्यनि ॥ स ४ नकदा
 विन्नवकष्यययन ॥ ननिर्यगानिनयमलाकवकदाविदयित्यस्यन ॥ ययययननिउत्पयन ४ सर्वज्जा
 गोङ्गागोङ्गास्मिनाहविनि ॥ ८ ॥ ॐ नमो गवगजयनमिनायूज्ञानशुविनिधिगङ्गावाजायनथगताया ॥

हंससम्पदस्वजाय ॥ नयथा ॥ ॐ पूर्य २ महापूर्य २ अयनमिनायूज्ञानशुविनिधिगङ्गावाजायनथगताया ॥
 ॐ सर्वसम्पदयनिगुद्धधर्मगगनसम्पदगङ्गावविगुद्धमहानययनिवाययस्वाहा ॥ ॥ य ४ ॥
 दंमयनिमिनायू ४ मूर्तिलिखिद्यनिलिखाययिद्यनि ॥ ननवकुनमिनिधर्मसम्पदगङ्गावविगुद्धमहानययनिवाययस्वाहा ॥
 निष्ठायिनानिरुविद्यनि ॥ १० ॥ ॐ नमो गवगजयनमिनायूज्ञानशुविनिधिगङ्गावाजायनथगताया ॥
 हंससम्पदस्वजाय ॥ नयथा ॥ ॐ पूर्य २ महापूर्य अयनमिनायूज्ञानशुविनिधिगङ्गावाजायनथगताया ॥

जानाजायनथागनाया ३ हं न सम्यक् स्वज्ञाय ॥ न यथा ॥ ॐ पू० २ महापू० अय नमि न पू० अय नमि नायू पू० स्नान
 समानाय धि न ॐ सर्व सस्मानय निगुं धर्म न गगन समुद्र न ग्वाव विगुं महानयय निवानय स्वाहा ॥ ७ ॥
 यः ॥ दमय निमि नायू ४ सुं लिखि विनि लिखाय विनि ॥ न नेव दु न सि नि धर्म नाजिका सह सा धि क नायि
 नानि रु वि वि नि ॥ ५ ॥ ॐ न मा रु ग व न अय नमि नायू स्नान गु वि नि धि न न जाना जाय न था ग ना या ३ हं न सम
 यक् स्वज्ञाय ॥ न यथा ॥ ॐ पू० २ महापू० अय नमि न पू० अय नमि नायू पू० स्नान समानाय धि न ॐ सर्व स

स्नानय निगुं धर्म न गगन समुद्र न ग्वाव विगुं महानयय निवानय स्वाहा ॥ ॥ यः ॥ दमय निमि नायू
 सुं ॥ लिखि विनि लिखाय विनि ॥ न नेव दु न सि नि धर्म नाजिका सह सा धि क नायि नानि रु वि वि नि ॥ ५ ॥
 ॐ न मा रु ग व न अय नमि नायू स्नान गु वि नि धि न न जाना जाय न था ग ना या ३ हं न सम्यक् स्वज्ञाय ॥ न यथा ॥ ॐ
 पू० २ महापू० अय नमि न पू० अय नमि नायू पू० स्नान समानाय धि न ॐ सर्व सस्मानय निगुं धर्म
 न गगन समुद्र न ग्वाव विगुं महानयय निवानय स्वाहा ॥ ॥ यः ॥ दमय निमि नायू सुं लिखि वि

ॐ

लिखाययिष्यन्ति॥ तस्ययथैश्वर्यं नैर्यानि कर्मानि यानि कुर्यात् ॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
गुविनिश्चितं तज्ज्ञानं ज्ञायते यथा गतायाः ॥ हन्तं सम्पत्तुं स्वप्नय ॥ नयथा ॥ ॐ यत्पुत्रं महापुत्रं जयन्तमिह यत्पुत्रं
जयन्तमिह यत्पुत्रं ॥ ज्ञानं सम्पत्तुं यथैश्वर्यं ॐ सर्वं संस्कारं यानि गुणधर्मा गगनं समुद्रं च राव विगुणं
महानयं यानि वा नयं स्वाहा ॥ यः ॐ दं मया विमितां यः गुणं ॥ लिखिष्यन्ति लिखाययिष्यन्ति ॥ तस्य नः
मालावानमात्रिका नयं ज्ञानं वा कृत्वा नोका नमः पूषवा श्वतानं नयन्ति ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३१

यन्मिह यत्पुत्रं गुविनिश्चितं तज्ज्ञानं ज्ञायते यथा गतायाः ॥ हन्तं सम्पत्तुं स्वप्नय ॥ नयथा ॥ ॐ यत्पुत्रं महापुत्रं
जयन्तमिह यत्पुत्रं जयन्तमिह यत्पुत्रं ॥ ज्ञानं सम्पत्तुं यथैश्वर्यं ॐ सर्वं संस्कारं यानि गुणधर्मा गगनं समुद्रं च
राव विगुणं महानयं यानि वा नयं स्वाहा ॥ यः ॐ दं मया विमितां यः गुणं ॥ लिखिष्यन्ति लिखाययिष्यन्ति ॥ तस्य
मननं कालं समं यनं वनं तथा ब्रह्मकोटं संमुखं दर्शनं दास्यन्ति ॥ ब्रह्मसहस्रं हं मुनिं स्यादनामयन्ति ॥ ब्रह्म
कृता ब्रह्मकृता ॥ स्वयं कृमिष्यन्ति ॥ नात्र का कान विविक्लिप्ता न विमनिवाह उत्यादयिष्यन्ति ॥ १५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गवर्गजयनमितायूज्ञानशुविनिश्चितनकाजायनथगतायाः हनसम्पक्कम्बुहाय ॥ नयथ ॥ ॐ यूध्व २ महा
यूध्वजयनमिरयूध्वजयनमितायूध्वज्ञानसकानायधिन ॐ सर्वसक्ताययनिशुद्धधर्मगगनसमूहकस्व
रावविशुद्धमहानययनिवात्रयस्वाहा ॥ ॥ यः ६०० दंमयनिमित्तायू ४ सु ३ नारिवनं ॥ लिखिष्यन्लिखाययि
ष्यन् ॥ सः ४ सुखावयांलाकधनु उयययन ॥ अमितारस्यनथगगनस्यवृद्धकुरु ॥ १३ ॥ ॐ नमो गवर्गजय
नमितायूज्ञानशुविनिश्चितनकाजायनथगतायाः हनसम्पक्कम्बुहाय ॥ नयथ ॥ ॐ यूध्व २ महायूध्व ३

यनमिरयूध्वजयनमितायूध्वज्ञानसकानायधिन ॥ ॐ सर्वसक्ताययनिशुद्धधर्मगगनसमूहकस्वरा
वविशुद्धमहानययनिवात्रयस्वाहा ॥ ॥ यः ४०० दंमयनिमित्तायू ४ सु ३ नारिवनं ॥ लिखिष्यन्लिखाययि
ष्यन् ॥ सः ४ सुखावयांलाकधनु उयययन ॥ अमितारस्यनथगगनस्यवृद्धकुरु ॥ १३ ॥ ॐ नमो गवर्गजय
नमितायूज्ञानशुविनिश्चितनकाजायनथगतायाः हनसम्पक्कम्बुहाय ॥ नयथ ॥ ॐ यूध्व २ महायूध्व ३

ॐ

यंमृदध्वकमपिकायायनस्यनि॥ ननगिसाहसमहासाहसलाकधनो सधनत्रयत्रियूर्ध्वरुत्वादानंदरुः
रुवति॥ १८ ॥ ॐ नमो गवतः अयत्रमिनायूज्ञानशुविनिश्चिननज्ञानाजायतथागतायाः हनसम्यक्स्व
जाय॥ नयथा ॥ ॐ यूर्ध्वरमहायूर्ध्वअयत्रमिनायूयूर्ध्वज्ञानसमानायश्चिन ॐ सर्वसस्कात्र
यनिशुद्धधर्मगगनसमूहस्वरावविशुद्धमहानययनिवात्रयस्वाहा॥ यथैवमयनिमिनायूष्टसं
सहनयूजयिष्यति॥ ननसेकलसमाकासर्वधर्मयूजिनरुविष्यति॥ २० ॥ ॐ नमो गवतः अयत्रमिनायू

३४

ज्ञानशुविनिश्चिननज्ञानाजायतथागतायाः हनसम्यक्स्वजाय॥ नयथा ॥ ॐ यूर्ध्वरमहायूर्ध्वअयत्रमिनायू
यूर्ध्वअयत्रमिनायूयूर्ध्वज्ञानसमानायश्चिन ॐ सर्वसस्कात्र यनिशुद्धधर्मगगनसमूहस्वरावविशुद्ध
धमहानययनिवात्रयस्वाहा॥ ॥ यथाविद्यधिनिविद्विष्वउवककूर्द्धकनकमूनिकास्पद्यः ॥ ॐ यूर्ध्वरमहायूर्ध्वअयत्रमिनायू
निगथागतस्यस्वरागथागतानां॥ सधनत्रयत्रियूर्ध्वमपियूज्ञाहत्वाजावकस्ययूर्ध्वस्वधस्यप्रमानं ॥ ॐ
गनयिर्दुसूयूर्ध्वस्वधस्यप्रमानं गनयिर्दु ॥ ॐ नमो गवतः अयत्रमिनायूज्ञानशुविनिश्चिननज्ञानाजा

यकथागतायाः हं न सम्यक् कृन्वाय ॥ गद्यथा ॥ ॐ यूथ २ महायूथ जय नमि न यूथ जय नमि नायूथ यूथ ज्ञान
सम्मानाय धित ॥ ॐ सर्वसत्कात्रय निगुद्ध धर्म न गगन समूह न गव विगुद्ध महानय य निवा नय स्वाहा
यथां सुमनू यर्वत नाजस्य समान न तना सिंरुत्वा दानं द रुस्य यूथ स्कन्धस्य प्रमानस्य प्रत्यसक गनयिं
ननाः ३ य निमि नायू ४ सुगस्य प्रमानस्य यूथ स्कन्धस्य प्रमानं संक गनयिं ॥ २२ ॥ ॐ न मां गव न जय
नमि नायू ज्ञान गु वि निधि न गता नाजाय नथागतायाः हं न सम्यक् कृन्वाय ॥ गद्यथा ॥ ॐ यूथ २ महायूथ जय

यत्रमिहयूथञ्जयत्रमिहायूथञ्जयनसम्मानायधिरु ॥ ॐ सर्वसंस्कारपवित्रुद्धधर्मगगनसमूहसंस्कार
ववित्रुद्धमहानययत्रिवानयस्वाहा ॥ यथावत्वात्रामहासमूहोदकविन्दुप्रदायिर्दुष्टास्यगद्ययिर्दुर्नगा
ञ्जयत्रमिहायूथञ्जययूथस्वन्धस्यप्रमानंगद्ययिर्दु ॥ २४ ॥ ॐ नमो गवतञ्जयत्रमिहायूथञ्जयविनिधि
नृनृजाजाय नृधगगनाग्रहनेसम्यक्स्वहाय ॥ नयथा ॥ ॐ यूथ२महायूथञ्जयत्रमिहायूथञ्जयत्रमिहायू
थञ्जयनसम्मानायधिरु ॐ सर्वसंस्कारपवित्रुद्धधर्मगगनसमूहसंस्कारववित्रुद्धमहानययत्रिवानयस्वा

ॐ

वीरभक्तं ॥ १ ॥ प्रज्ञावन्ननसमूहकवृद्ध ॥ प्रज्ञावलालितगाननसिंह ॥ प्रज्ञावलस्यवश्रयतिष्ठमहाकाया ॥
निकेस्पयूप्यप्रविष्टभक्त ॥ ७ ॥ ॐ नमो गवतः अयनमिनायूज्ञानशुविनिश्चिन्नकाजाय ॥ नथागताया ॥
हन्तसम्यक्स्वजाय ॥ नयथा ॥ ॐ पूर्य २ महापूर्य अयनमिनायू पूर्य अयनमिनायू पूर्य अयनसम्हायाय शिव ॥
ॐ सर्वसम्मानयनिशुद्धधर्मगगनसमूहकवृद्धावविशुद्धमहानययनिवाचय स्वाहा ॥ २१ ॥ ॐ ॥
ॐ हमेवावट्ठगवानात्सनास्त्वहिकुर्वीधिसत्त्वामहासत्त्वसाचसर्वावकियवर्द्धवमानूखाशुनगवृद्धगं

३१

धर्वश्रुत्ताकारवन्ताहाधिरमयनदनिगिस्म ॥ ॥ अय्यअयनमिनायू महायानसूज्ञं समायं ॥ ॐ ॥
ॐ नमो गवतः सत्त्वायथा ॥ ॐ नमो गवतः सर्वइर्गनियनिष्ठाधनराजस्य ॥ ॐ वजीधिरानसमयं ॥ ॐ ॥
अय २ सर्वपायविष्ठाधयविशुद्धसर्वकर्मावन्नराविशुद्धस्वाहा ॥ ॐ ॥ अधनिष्ठाधयसर्वपायसर्वसत्त्वस्था
ॐ ॥ ॐ सर्वपायविष्ठाधनिर्दूर ॥ ॐ ॥ ॐ नमो गवतः सर्वइर्गनियनिष्ठाधनराजाय नथागताया ॥
हन्तसम्यक्स्वजाय ॥ नयथा ॥ ॐ अधनि २ सर्वपायविष्ठाधनि ॥ शुद्धविशुद्धसर्ववर्द्धविष्ठाधनिस्वाहा ॥ ॐ ॥

3

[illegible]

३८

धनि स्वाहा ॥ रुट ॥ ॐ मेघ यरु न माय स्वाहा ॥ ॐ भू मा ध भू मा ध दर्श नाई ॥ ॐ सर्वा या य ऊ ह सर्वा या य वि ष्णु धः
निई ॥ ॐ सर्व त मा धो नि त न म मिई ॥ ॐ ग न्ध ह सि नी ई ॥ ॐ ठू ल रु म ई ॥ ॐ ग गे रा ग ग य लो च न ई ॥ ॐ शान क
रु शान व ति ई ॥ ॐ भू म न भू म न प्र रु भू म न व ति ई ॥ ॐ व ड रु व ड व ड व ला कि नि स्वाहा ॥ ॐ रु ड व नि रु ड य
ल ई ॥ ॐ काल नि म हा काल नि ई ॥ ॐ व रु ग र्भ ई ॥ ॐ भू रु य ई ॥ ॐ भू रु य क र्मा वि न ना वि र ष्ण ध न स्वाहा ॥ ॐ
प्र ति हान कू ट स्वाहा ॥ ॐ स म रु रु ड ई ॥ ॐ की ई ई ॥ ॐ ग रु व रु स म य ई ॥ ॐ व रु काना न ला रु ई ॥ अ हि धि

मां॥ ॐ टट॥ ॐ वज्रकालानलाकड्डं॥ ॐ वज्राननदहपवमथरुज्ज्वालं॥ ॐ वज्रदृष्टमरुवनरुसर्वानस्वाहा॥
 ॐ रुनूरुज्ज्वालं॥ ॐ वज्रयज्ज्वालं॥ ॐ वज्रयागकीं॥ ॐ वज्रयगाकयनक्षिनिनि॥ ॐ वज्रगिनुमन॥ ॐ वज्रगिखनन
 नम॥ ॐ वज्रकर्मकं॥ ॐ वज्रवधं॥ ॐ वज्रवक्रं॥ ॐ सर्वविद्रुकायवाकविरुयथाभनवज्रवधनाक्षमि॥ ॐ सर्वग
 गरुजायस्सनायात्मानिन्योन्यामि॥ सर्वगगनवज्रसेत्वश्रुतिस्त्वमां॥ सर्वविद्रुसर्वगगनयुजाविष
 कायान्माननियोन्यामि॥ ॐ सर्वगगनगन्धयुजामघसमूद्रस्वनसमयकं॥ ॐ सर्वगगनवज्रवत्तारि

विष्वक्मां॥ ॐ सर्वविद्रुसर्वगगनयुजाप्रवरुनायात्माननियोन्यामि॥ ॐ सर्वगगनवज्रधनप्रवरुयमां॥ ॐ
 सर्वगगन॥ ॐ सर्ववित्सर्वगगनवज्रकर्मस्वआत्मानिन्योन्यामि॥ सर्ववित्सर्वगगनवज्रकर्मकूपय
 मां॥ ॐ सर्वगगनयुजामघसमूद्रस्वनसमयकं॥ ॐ सर्वविद्रुययुजामघसमूद्रस्वनसमयकं॥ ॐ
 सर्वविद्रुजालाकयुजामघसमूद्रस्वनसमयकं॥ ॐ सर्वविद्रुगन्धयुजामघसमूद्रस्वनसमयकं॥ ॐ सर्वविद्रु
 वाध्वज्ज्वालंकाययुजामघसमूद्रस्वनसमयकं॥ ॐ सर्वविद्रुहासनास्यनकिजीजोख्यानूलनयुजामः

३

घसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्वकालक्षत्रयुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्वकयुजामघसमू
दस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्वमहावज्जह्वयुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्वनरुययुजामघसमूद
स्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्वनरुनमहाधर्मावगानकान्ध्यानमितायुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्व
संसात्रयवित्वागानरुनमहावीर्ययानमितायुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्वनरुनभोव्यविहानध्वा
नयानमितायुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्वसर्वायायविष्ठाधनिज्ञानावलाकषलिधित्रमिषुजामघ

४०

समूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविसर्वायायविष्ठाधनिज्ञानावलाकषलिधित्रमिषुजामघयुसमस्वननसमयहं॥
उंसर्वविग्वसर्वायायगन्धनासनिवेज्जगत्वायाययानमितायुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविल्कायनि
र्यागनयुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्ववाकनिर्यागनयुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्ववि
ग्वचिरुनिर्यागनयुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंसर्वविग्वगुम्फनिर्यागनयुजामघसमूदस्वननसमयहं॥ उंस
र्वविग्ववर्ज्जले॥ उंसर्वविग्ववन्धुत्॥ उंसर्वविग्वविष्टवज्जह्वमरुवहदयमययद्वधित्रिष्टसर्वसिद्धिदेहं॥

३

न॥ वृंशदानुदवशयेलाकपालवदुदिसं॥ अग्निनाकसवायूथ॥ हृताधियतिनमस्तु॥ ॐ भूकालमुखसर्वधः
 स्मृतां माधनूयनदत्ता हं हं म॥ ॐ वज्रदृष्टं॥ ॐ मून२ महामूनय स्वाहा॥ ॥ ॐ सर्वइर्गर्गनियविः ॥ अधननाज
 यगथागगाया३ हं सम्यक्स्वहाय॥ नयथा॥ ॐ ॥ अधन२ विः ॥ अधनसर्वपायविसाधनसर्वकर्माववनवि
 ॥ अधनस्वाहा॥ ॐ वज्रहं॥ ॐ नत्तारुमनां॥ यमाकमकीं॥ ॐ विः ॥ रुमभृ॥ ॐ हं धीजी॥ हं गं जीं॥ ॐ
 सर्वसुक्तायेयविशुद्धधर्मगगनसमृद्धस्वहावविशुद्धमहानययविवात्रय स्वाहा॥ ॐ मून२ महामू

४३

नय स्वाहा॥ ॐ नमः॥ सर्वइर्गर्गनियविः ॥ अधननाजयगथागगाया३ हं सम्यक्स्वहाय॥ नयथा॥ ॐ ॥ अध
 न२ सर्वपायविः ॥ अधनशुद्धविशुद्धसर्वकर्माववनवीशुद्ध स्वाहा॥ ॐ सर्वविशुद्धागघाटयं॥ ॐ सर्वविद्व
 ज्वज्रं॥ ॐ वज्रसमाज३ हं वं॥ ॥ वज्रयूथं॥ वज्रधूथं॥ वज्रदीपं॥ वज्रगन्धं॥ ॐ सर्वगथागनध
 ययूजामघसमृद्धस्वनसमयं॥ ॐ सर्वगथागनयूथयूजामघसमृद्धस्वनसमयं॥ ॐ सर्वगथाग
 नदिययूजामघसमृद्धस्वनसमयं॥ ॐ सर्वगथागनगन्धयूजामघसमृद्धस्वनसमयं॥ असमांचला

वासमिगसानधर्मिणः कनूत्तमकाजगद्वहानवः असमकसर्वगुणसिद्धिदायिनः ॥ असमां वनासमवनाय
 धर्मिनः गगन्धसमायगगानविद्यनगुधनसननूकयसिमिकसूटसत्त्वधुवनसिद्धिदायिषुविगनः यनषु
 असमकसिद्धिषु ॥ अतनामनाकनूधविगतानिना ॥ प्रनिधनसिद्धिनिधनाधर्मधेना ॥ जगन्तार्थसाधनधनः ॥
 समकिनांसनरुम्विनानमिहाहृयात्मनाननिनाधकनूधनानिकाचला ॥ वज्रनिललाकवनसिद्धिदायिका
 अमिनामिनवसमाफिंनंगनाः सुगतगतेष्वपि अहासूधर्मगादिसमयायसिद्धिवनदाददनुमः ॥ वनदानना

सुगतिनागनामदा ॥ सकलशिलाकवलसिद्धिदायिकाः सुगताश्रियगतिना अनाहता ॥ ॐ लम्भधनं २ विलम्भधनं
 २ सर्वकर्मावननविलम्भधनं स्वाहा ॥ ॐ कक्षनी २ वाकनी २ नावाती २ शायनी २ सर्वकर्मावर्धनी विश्वधनिसा
 हा ॥ ॐ नल २ सहानलनलां किनूधनलसकयनलमाननवर्धनी विश्वधनस्वाहा ॥ ॐ अमाद्यां प्रतिहनहल सर्व
 कर्मावननविलम्भधनस्वाहा ॥ ॐ अमाद्यां प्रतिहनहल सर्वकर्मावननविलम्भधनियस्वाहा ॥ ॐ यूध २ महायू
 ध अयनमिगयूध अयनमिगायूध अनसूनायथिरुं सर्वसत्त्वानयनिगुडधर्मनगगद्यसमूह

मयं यत्रानि सर्वसत्त्वानां के साहा ॥ ॐ नत्त २ महानत्त नत्त संतव नत्ता किनत्त नत्त माना वर्यु विगुद्ध २० मध
 य सर्वपापान् कुरु ॥ ॐ अमाघां प्रतिरुत सर्वा वनध विमथानि रुत २ कुरु ॥ ॐ ऊरु वंहा ॥ रुगवन वज्र वरुः
 हि समयस्त्वं ॥ ॐ वज्र समय कुरु ॥ ॐ प्रविष्ट वज्र कुरु ॥ ॐ वज्र समय कुरु ॥ ॐ वज्र सामाद्याय कुरु ॥ ॐ वज्र दृष्ट कुरु
 ॐ वज्रा विषये आठ ॥ वज्रा विषये गां ॥ ॐ यमा विषये की ॥ ॐ कर्मा विषये अठ ॥ ॐ वज्रा विषये कुरु ॥ ॐ व
 ज्रा विषये गां ॥ ॐ यम कलसा विषये की ॥ ॐ कर्म कलसा विषये अठ ॥ ॐ माला विषये गां ॥ ॐ वज्र यथावन

मना विषये की ॥ ॐ वज्र मूडा विषये कुरु ॥ ॐ वज्र मूडा विषये कुरु ॥ ॐ वज्र मूडा विषये गां ॥ ॐ यम मूडा
 विषये की ॥ ॐ कर्म मूडा विषये अठ ॥ ॐ वज्रा विषये कुरु ॥ गां की ॥ ॐ वज्र मूडा विषये कुरु ॥ ॐ वज्र मूडा विषये
 के गां ॥ ॐ यम मूडा विषये की ॥ ॐ कर्म मूडा विषये अठ ॥ ॐ वज्रा विषये कुरु ॥ गां की ॥ ॐ वज्र कर्मा विषये अठ
 वज्र वका विषये कुरु ॥ ॐ वज्र वका धियति त्वति विषये ॐ ॐ ॐ कुरु गां २ की २ अठ ॥ ॐ वज्र धानि विषये ॐ
 त्वधानि विषये गां ॥ ॐ यम धानि विषये की ॥ ॐ कर्म धानि विषये अठ ॥ वज्रा विषये कुरु ॥ गां की ॥

3

[illegible]

87

हा॥ उं उं ऊं उं धि० उं नू० उं क० उं ग० उं ल० उं क० उं ज० ऊं वं हा॥ उं प्र नि ऋ धं महासत्त्वाम्यजधनास्त्राय॥ हहहहा॥
 उं यू० ध० २ महायू० ध० अ० न मि न यू० ध० अ० य न मि न यू० ध० ॥ ज्ञानसत्ताप्रायश्चित्तस्वाहा॥ उं की० ४ उं ऊं स्वाहा॥ उं
 ऊं स्वाहा॥ उं ऊं स्वाहा॥ उं हं स्वाहा॥ ऊं डि० ऊं जी० ४ उं वर्जधनेन त्वधनयमधनविश्वधननथगगनसमया
 निक्रमनथगगनसमयधानकाहं॥ उं नथगगनप्रनिद्धा॥ समयत्वं॥ उं सर्वनथगगनाहिविचैश्वर्यधनः
 स्त्राययनिऊं॥ उं वज्रवज्राहिविचैश्वर्य॥ उं वज्रनत्वाहिविचैश्वर्य॥ उं वज्रयमाहिविचैश्वर्य॥ उं वज्रकर्म

[illegible][illegible]

यमाहवसन॥ कायदुवावममननगथव॥ प्रदिदधामिभ्रुसर्व॥ यवदधदिधियुध्रुगस्यलोकाभ्रु
 क॥ प्रत्यकजिनानां वृद्धगुणानथसर्वजिनानां॥ तंभ्रुमादयमीभ्रुसर्व॥ यवदधदिसिलाकषदीया॥ बाधि
 विवृधभ्रुसंगतयाफ॥ गानरुसर्वभ्रुधमिनाथा॥ यवभ्रुनरुनवरुननायो॥ यपिचनिहीरुदधदुकामा
 गानरुयावमिपाभ्रुलिहना॥ कभ्रुनजायमकल्पतिहनु॥ सर्वजगत्सहिनायसुखाय॥ वन्दनभ्रुनदध
 ननाया॥ भ्रुमादनधन॥ यावदनायायवभ्रुसमयिसिधिरुकिधिरु॥ बाधियिनामयमिभ्रुसर्वयुजि

११

गलानुभ्रुगिरुवृद्धायव॥ धयनिदधदिधिलाक॥ यवभ्रुनागतभ्रुलपूरानु॥ यध्रुमनानथ॥ बाधिविवृ
 द्धायावगकविनदधदिधिरुका॥ कयनिगुद्धवनुउदाना॥ बाधिकमंयगतहिजिनहि॥ वृद्धसुगतिव
 लानुप्रयुध्रु॥ यावगकविनदधदिधिसखा॥ सुसुखितासदशालुभ्रुनाग॥ सर्वजगत्सवधमिकभ्रुध॥
 लानुप्रदक्रिदभ्रुधुआसा॥ बाधिकेशिनेवभ्रुवनेमाना॥ लविजानिस्मान॥ सर्वगतियु॥ सर्वजगत्सुव्यत्य
 ययारुषीवृजीना॥ भ्रुनित्युहवया॥ सर्वजिनाननूहिकयमाक्ष॥ रुद्रवनिपनिपूरुयमाक्ष॥ लीलव

रु

निर्वीमलायनिशुद्धानित्यमखलम् ॥ महीध्वजं दवन्तु हिव नागवन्तु हिय ककुत्सु मन्थवन्तु हियानि
वसवन्तु गानि जगत्पुनर्वदृष्टाय धर्म ॥ यस्वल्ल्या नमितास्वहिय क्वा वाधयि विरुमजातुं विमृक्षय वि
वपाय कामावन्ती लुप्यनि कयूरा रुभुषा ॥ कर्म कुक्षु मी नयथा ला कगतिषु विमृक्षित्यं
यमयथा मनील नभिलिफ ॥ सूर्यगणी गगनवज्रसक ॥ अविश्रयाय इष्टानपसमका सर्वजगं सुखीथ
ययमान सर्वजमस्य हिताय च नयं गावन्तु यथादिशुतागु ॥ सखचरी नरुयमान बाधी च विपनि

५२

युजयमान ॥ रुद्रविव प्रणवयमान सर्वभूतागत कल्पवयं ॥ यवसहागत समर्थाय न हि समागम
नित्यरुवया ॥ कायकुवावदुश्चरन गावा च कविप्रदिक्षानवयं ॥ ययिवमिशममहितकामा रुद्रव
नियदिदर्शयिमान ॥ न हि समागम नित्यरुवया गावभूतं न विनागयिजुं ॥ मन्मूखनित्यमहं जिनयथ
बुद्धसूतयविहृताथान ॥ नृष्वयुजकनय उदना सर्वभूतागत कल्पमस्विन्न ॥ धात्रयमानुजिनानमध
र्म बाधिविंघनिदीपयमान ॥ रुद्रविव विस्वधयमान सर्वभूतागत कल्पवयं ॥ सर्वरुवखुवसंस

रु

समकुरुतः॥ भेदवलेन समगहनः पृथक्वलेन समकुरुतः॥ ज्ञानवलेन असेनं नः प्रकृत्यायः समा
धिवलेन वाधिवलेन समुदनेयमानः॥ कर्मवलेन निरुद्धधयमानः कृष्णवलेन निमदयमानः॥ मानवलेन अ
लेकनमानः॥ वृषयी रुद्रवरी वलसर्वः कुरु समुद्रविष्ठाधयमानः॥ सत्त्वसंमुद्रविभावयमानः॥ धर्मसंमु
द्रविषययमानः॥ ज्ञानसंमुद्रविगमयमानः वर्यसंमुद्रविष्ठाधयमानः॥ प्रनिधिसंमुद्रयनिपूवयमा
नः॥ कल्पसंमुद्रवलयमखिलः यवहृयध्वगगानजिनानां॥ वाधिवलेन निधनविष्ठाया॥ गानकुरुनि

५४

यसर्विभ्रमेषा॥ रुद्रविविधधीयवाधिः यद्वक्यसूत्रसर्वजिनानां॥ यस्यचनामः समकुरुद्रः कुरुति
इत्यसरागवरीया॥ नामयनि कृष्णलेनं मुसर्वानां॥ कायडवाचनस्य विगुद्धिः॥ धर्मविगुद्धयः
कुरुविगुद्धिः यादृशानामनः॥ रुद्रविद्वेषादृशानां समकुरुतः॥ रुद्रवरीयः समकुरुगुणायः म
धिनीप्रधिधनवलयः॥ सर्वीअनागरकल्पमखिलः पूवयिनां कियसर्वभ्रमेषां॥ मानप्रमाथरुव
यवरीयः॥ मानप्रमाथरुवययुद्धनां अप्रमानवरीयायथिहिला॥ जानयिसर्वी विकुविदुनवां॥

रु

सर्वतनिष्ठनरुस्यवया॥ सत्वश्रुणयननिष्ठनरुस्येव कमडुङ्गादुयावनिष्ठनरुवनीष्टममप्रनिधानं॥
यवदशदिशि कुरुते॥ वत्तेश्वलेष्टनदयुक्तिनानां॥ दिव्यचमानुखसोव्यविगिष्टान कुरुज्जायमकल्पद
दहा॥ यथैव संयविष्टमनमाजं॥ गुरुसज्जनयदधिमूर्तिं वाधिवनामनूयार्थयमाना॥ अथविमिष्ट
रुवदिमूयुधे वक्तिनरुवकीष्टयाया॥ वक्तिनरुवकिष्टमिष्टा कियुस्यधितितं अमिष्टां॥ यथैव
रुवविप्रविधानं॥ लारुसुवमृगीविष्टनवांस्वागुतं ममानुवज्जम॥ यादससाहिममकहदक्यि

गज

यिगथमविप्रारुवकि॥ यायकुरुयवज्जनं त्रियादियन अज्ञानवत्तानरुतानिष्ठममूहदवनिरुतमा
नकिप्रयत्रिष्टयनेतिश्रुणवं॥ ज्ञानडुष्टयुलकनरुय वधुष्टुगगदुष्टादुष्टनरुतिथिकमात्रगत्ति
प्रधुष्टयुक्तिनरुगित्स सर्वशीलाक॥ कियुसगदुष्टिवाधिमूर्तिं गत्वनिवीदति॥ सत्वहिनाय॥ वधियवा
धिप्रवर्तयिक्ते॥ धवयीमानुससेन्यकसर्वयावुष्टुवनीष्टधीधानं अत्रयि वावयिदशयिनावा वुष्टु
विज्ञाननियामुष्टवियाका॥ वाधिविमिष्टमकाकुरुनथा मरुष्टिमित्रियसज्ञानगुप्तभावसमकुरुदतः

रु

रुना नापांष्ट्रिनिकर्जितं ॥ नाना निर्ममंकात्र ॥ नाना नृग समाकूल ॥ नाना कृशु मजातिरि ॥ समं नृदिवानिः
 न ॥ नाना हथरु नायक ॥ यत्पदागिरि निश्वसि ॥ किन्नरे मधुनागिरे ॥ मरुवा नून सकृत् ॥ सिद्धि विद्या धन ग
 ने ॥ गंधर्वे धनिनादिने ॥ मूर्तिरिवी नवा लव ॥ सननं सुनि सविरु ॥ वाधिसत्व गने यन्नि ॥ दशरु मिश्व
 ने ययि ॥ आर्यना नादि हि दवि ॥ विद्या नाऊ न हयुना ॥ कान नाऊ गखे श्वाखे ॥ हययि वादि लिहृन ॥ सर्व
 सत्व हि नायका ॥ रुगवान वलाकिन ॥ विजहान न तथा मान ॥ यमगर्गानि लिहृन ॥ मरुता न पसा रुका

३१

मेत्याथ रुययां मित धर्मदिद नृपान् मरुत्या दवयार्वदि नृनाय विष्ट मागम्य वज्रयाणि मरु
 वले यमरुपया युका प्रविष्टा सावलोकिने नृकजा वगसिंहानि गज आघुम्य संकन सादं
 क मां मून सत्वा मरुत संसा न सागन वेध संसा व केयाखे नाग दवत भाहके मूय न ऊन सः
 लाय संम्य क हि महामून एवं मूक ऊगं नाथ सथा मान वलाकिट उवाच मधूला वानि वज्रया
 निप्रवाधनि शुन गुक क नायका भूमिगारु स नायिनां प्रनिधान वसात्य न ममाह्ला लाकमा

रु

महाकव्ययापताः कृताश्च नः धाम्ना ॥ उदित्यदितसंकासः पृथ्वीदवदनप्रता ॥ तामयनि ॐ मांतानास
४ देवागुनमानवा ॥ कंययंतिरया लाकाः शसयनयकनाकसा ॥ नीवात्यनकनादेविः सारु श्रितिक
वन ॥ रुगतसनकनाथयः अहंमत्यादितागत ॥ काकावसकसंघातः नानात्यसमाकल ॥ सवननादवना
मानिः सत्त्वानकांमहंसदा ॥ गानयिष्याम्यहंसत्वाः नानात्यमहानवा ॥ मनगाननिमालाकः गभयनिम
निपुंगवा ॥ रुतांशुलियुतादताः नरसागनसाधसा ॥ कलगतिकंकनीकलः ॐ दंववनमूकवीरु ॥ ना

३८

माष्टकंसकं कहिजत्यनार्तारुर्जनी दृष्टादमिस्वयेनारथे वाधिसत्यमहर्षिके सर्वयायहनंपुंन्य माग
त्यहर्षिवर्धनं धनधान्यकनं वैवज्रागधयष्टिवर्धनं आयुश्चागधजननं सर्वसत्यसखावहं लक्ष्मिणी
शायकं वैव सर्वसत्यविवर्धनं मेरीमानव्यमत्वानां नलीर्तिरुमहामूल एवंमूकुरुगवान् प्रहसंमव
लाकिन व्यवलाकदितासर्वा मेरीयस्यवनयाजादमा दृष्टिनकनमूदस्यपुन्यनकनमदिनं नम्वान
महावाह साधुसाधुमहानय नामाफनुमाहागमः सर्वसत्यैकवत्सय जानिसंहत्यमनूजाः सम्पक्क

रु

सर्वतः स्वना ॥ सर्वव्याधिविनिमूकः सर्वस्वर्यगुणां विना ॥ अकालमृगनिदस्याः भूतानि सुखावनि ॥ नाः
 निहंसपवकामीः देवसंघागुनाथम ॥ अनुमादद्वमनकाः रविव्यधंसनिदगा ॥ ४ ॥ उं प्राचनेमप्राचनेम
 नः नात्रात्रव्यः सर्वसत्त्वानुकेपिनिः ॥ सर्वसत्त्वानुकेपिनिः सहस्रशुभसहस्रशुभ ॥ ५ ॥ उं नमोऽहगवतः
 अवलाकय २ मां सर्वसत्त्वानां केऽहं रुद्रस्वाहा ॥ उं नात्रशुभशुभानां स्वाहा ॥ उं सर्वविशुद्धशुभानां स्वाहा ॥
 श्रीहरयनिर्मय ॥ स्याम्यः स्यामन्नपिनिः महाप्रोद्भवप्रववित्त्वपिनिः ॥ अयनाजिनामहाप्रोद्भिः विस्वत्रुपि

गुरु

महावना उं कल्याणनीमहारुजाः लाकधारीमहायसा सत्रस्वमिविष्ठावाडीः प्रलयावृद्धिवर्द्धनि धनिदा
 युष्टिदास्वाहा उं कावाकामन्नपिनिः सर्वसत्त्वहिनाशका संभमनात्रनिजयाः प्रलयात्रमितादवी आर्यः
 नात्रामनात्रेमा इष्टिसंविनियुक्तविद्यावालीषीयवदा वंदननामहालोपिः अजीतायिगवासया मा
 हामायामाहास्वनाः महावलपनाकेमा महाप्रोद्भिः महावंदीः इष्टसत्त्वनिशुंदनी प्रसांतासां ननुयावः वि
 जयाकलनप्रहा विद्युत्साविध्वजियजीः वकीवापियनायधः कुरुनिकुरुनिकात्रिः कात्रवाडीनिसावत्री

ॐ

लक्ष्मिमाहनि साक्षात् कार्याणि दिशुः ॥ ब्राह्मणीवदमाणावगुह्यवगुह्यवाप्तिनि ॥ मांगल्यासंकरीसो
म्याः जानव्यदामनोयमा ॥ कायाजनीमहावगमः संख्यासत्यायनादिना ॥ सार्थवाहकृयादिष्टिनष्टमार्गप्रद
र्मनं ॥ वनदासामनि साक्षिणी नृपामिना विक्रमः ॥ भवविधायिनि सिद्धाः वदालिभृमृगाधवा ॥ धन्यापुण्या
महालाभाः गुरुगर्भीयदर्शनः ॥ हृन्नांगसनिहिताः उग्रः उग्रमहागया ॥ उग्रदेहिना रुक्माः सन्यास
किवल्लना ॥ वागीश्वरिणि वागुक्ताः नित्या सर्वश्रमानूया ॥ सर्वाथसाधनिरुदात्मभिधमिधनंददा ॥ ॐ

३०

रुद्राक्षोत्तमीयुष्माः श्रीमन्लाक्ष्म्यात्मजः कावानामगुनानां ताः सर्वासाधनियुत्रयन् ॐ तावद्रुद्रा
त्रैविकोत्तमनित्या सर्वनियस्वाहा नामास्मान्नमस्कं यत्कृतिरिहिनवान् नधनरुद्रस्यस्मेहर्गः गुह्यदेः
वानामपि इक्ष्वाकं साकारगलागकर्धः सर्वकिल्बिषनाशनं सर्वव्याधिप्रसमनं सर्वसत्त्वसुखावहं
गीकात्रययथैहिमान् शुविस्नानसमाहितः लभधनप्रलोवकायन नाशप्रियासवाप्रयान् इषिनः
स्वाशुषिनिखं दग्निदाधनवान् रुद्रं यदा रुद्रं महाशालः मधालिवचनसंमया वधनामूयनं वधना

धूमिनिहकृत्वा ॥ तेलोक्तनाथवकाङ्क-विकसकसलाहव ॥ १ ॥ नमः शान्तमववृद्ध-संपूर्णयनानन ॥ गाः सा
 सहस्र-निकयपरसंकिन-लकल ॥ २ ॥ नमः कनकनिलावर्जयादि-यमविलेखित ॥ दानेविर्यगयकाकि ॥
 तिमिद्राध्यानलगावेनि ॥ ३ ॥ नमः साधगताङ्क-विजयानंदवाविधि ॥ अस्पृष्टयानमिताप्राफ-किनयू
 निधविन ॥ ४ ॥ नमः स्रस्तान्द्रकावनिवृणादिगंगन ॥ सफलाककुमाकाका-अस्पृष्टांकर्षका ॥ ५ ॥
 नमः शान्तानवब्रंममनूद्ध-व्यववाविन ॥ हनव्यगानगध्वगनायकयूनस्रुत ॥ ६ ॥ नमः सुदिगिरुका

प्रप्रजस्रुप्रमर्दनि ॥ प्रत्यालीटयदंभारठाठियिकालाकलाकल ॥ १ ॥ नमः साधमहाधाय-मानविन
 विनामनि ॥ हकमिहगव्यकावर्जसर्वस्रुनिसुंदनि ॥ ८ ॥ नमः सीनलमृडांकदयांगुलिविलेखित
 हवितालाषदिवक-निकयधकनकन ॥ ९ ॥ नमः प्रमृदिताठायमूकगाडिमालिनि ॥ हसप्रहसतुस्तानः
 मात्रलाकवसंकवि ॥ १० ॥ नमः समकहयानयटलाकषलकृत्वा ॥ वनरुक्टीरुकावसर्वायदविमोच
 नि ॥ ११ ॥ नमः शाखसुखसु-उमृकटाहवृत्तकल ॥ अमिताराजगारासूत्रकिननक्ष ॥ १२ ॥

ॐ

नमः कल्याणरुद्ररुद्रा लामाला नवस्थित ॥ अलिधमृदितावर्धनः प्रवृत्तविनागानि ॥ १३ ॥ नमः कनकला
घाटवननाहोत रुद्रने ॥ रुद्रुटिरुद्ररुद्रका नमः प्रयागा नमः दिनि ॥ १४ ॥ नमः शिवगुरु ठाकः ठाक निवानः
ॐ वल स्वाहा ॥ ब्रह्मवसंयुक्त महायाग कनासिनि ॥ १५ ॥ नमः प्रमृदितावध विप्रगोत्र प्ररुद्रनि ॥ १६ ॥
रुद्रयदं न्यास विद्या रुद्रका नदियिनि ॥ १७ ॥ नमः स्नानयाग घाट रुद्रका नका नवीजिनि ॥ मन्मद नः कला
सहवन उयवा निदि ॥ १८ ॥ नमः सूत्रसना कालहनि धाक कनथिना रुद्रदीनू रुद्रका नभस्य विष

३३

धासिनि ॥ १९ ॥ नमः सूत्रगथा यज्ञसूत्र किन्नरमविनि ॥ आवर्धमृदिताग कनि ॥ २० ॥ नमः कनकला
नमः रुद्रार्क मृद्नयन यनि रास्वत्र ॥ नात्र द्विप्रक रुद्रका न विषम कलना सीनि ॥ २१ ॥ नमः रुद्ररुद्र
विन्यासमिव ठाकि समन्विनि ॥ ग्रहय नात्र यज्ञा यनाम निप्रवत्र रुद्र ॥ २२ ॥ मन्मद मूलमिदं स्नातं नमः
स्नाने कविठानि ॥ यथैव ॥ २३ ॥ नमः रुद्रार्क मृद्नयन यनि रास्वत्र ॥ नात्र द्विप्रक रुद्रका न विषम कलना सीनि ॥ २४ ॥ नमः रुद्ररुद्र
रुद्रयदं ॥ सर्वाया यथैव ममनं सर्व इर्गमिनासनं ॥ २५ ॥ अरिषिकारुद्रयदुनं सफरिजिनकाटिनि

अस्मिन्महत्त्वमासाद्यसोऽर्वाद्यद्वयजगत् ॥ २४ ॥ विषयं तस्य महात्रयं वने वा धर्ममेतं ॥ सप्तधा त्वं लय
 यानि स्वद्विदयिदभवत् ॥ २५ ॥ गुरुकनविष्वाकाना यत्र तस्मिन् विना सति ॥ अनयां वैवसत्वा नां वि
 प्रसफा निवर्तिनां ॥ २६ ॥ यत्र काभा नरगत्युगंधनकाभा रुद्रधनं ॥ सर्वकाभा प्राप्ति न विधेय
 गिरुत्पत्ति ॥ २७ ॥ अस्मिन्महत्त्वमासाद्यसोऽर्वाद्यद्वयजगत् ॥ रगवत्या अर्या स्नातारु दानिकाया ॥ न
 मस्तानकविं सतिनां समापत् ॥ २८ ॥ यधर्माद्य उग्ररावाद्य उग्रवां रथगत् ॥ कवकनवां वज्रान नृपय

(३४)

वंवादिमहाशयवने ॥ यादृष्टं पुष्टकंदृष्टाना दृष्टं लिखितं मया यदि शुद्धं मशुद्धं वा मम दायन दियत् ॥
 गुरुसम्बन्ध १००० मिमाद्य रुद्रदस्मि मूलन कृत् मिधिया गशुकवान कुरुना सिलाकन धनूना सिगन्ध
 मसियेन स्मिं दिन संयुक् ॥ दानयेनिका निपुन अस्वक मंदय अंता गुरुवा रुद्र धर्मका मार्थिना नाधन
 वक्रवित्रसिं लाय्याज्ञा निथ कुं निम सीय नूयया जर्म जय पाय मकार्थ यरुज्म संतान दृधि आयु हृधि काम
 नाया यत्र अथा ३ स्ववाव निरुवन माकृषा दुकाम नार्थ ध्वपूस्तक दान विया रुल गुरी ॥ ३५ ॥

आशा नरकवादी

३५९

ASIA ARCHIVES

३५